COVID-19 पोल

उन भारतीयों की संख्या में वृद्धि हुई है जो सोचते हैं कि अर्थव्यवस्था के खुलते ही कोरोनवायरस के खतरे को बढ़ा-चढ़ा कर पेश किया जा रहा है।

कोरोनोवायरस संकट पर देश की विचार को समझने की प्रयास में, **टीम C-Voter**, 16 मार्च 2020 से 18+ वयस्कों के बीच, एवं हर प्रमुख जनसांख्यिकीय सहित दैनिक ट्रैकिंग सर्वेक्षण आयोजित कर रहा है। पोल ने देश भर के उत्तरदाताओं से उनके घर में वायरस के साथ भोजन/राशन की उपलब्धता के डर से उनकी विचारों के साथ-साथ उनकी आर्थिक और सामाजिक भलाई के बारे में सवाल पूछे।

टीम पोलस्ट्रैट ने आज कोरोनावायरस के डर और कोरोना वायरस के खतरे को बढ़ा-चढ़ा कर पेश किया गया है या नहीं, इसके बारे में सार्वजनिक राय में बदलावों का विश्लेषण किया है।

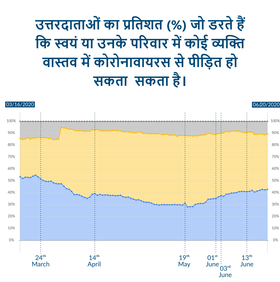

उत्तरदाताओं का प्रतिशत (%) जो डरते हैं कि स्वयं या उनके परिवार में कोई व्यक्ति वास्तव में कोरोनावायरस से पीड़ित हो सकता सकता है।

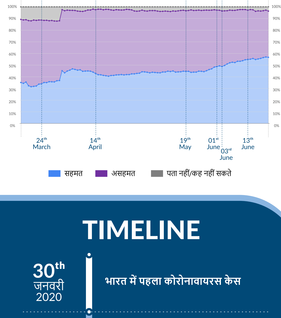

उत्तरदाताओं का प्रतिशत (%) जो मानते हैं कि कोरोनावायरस से खतरा बढ़ा चढ़ा कर पेश किया जा रहा है।

TIMELINE

30th जनवरी 2020	**भारत में पहला कोरोनावायरस केस**
24th मार्च 2020	**21-दिवसीय देशव्यापी तालाबंदी की घोषणा (लॉकडाउन 1.0)**
14th अप्रैल 2020	**कोरोनावायरस के मामले 10,000 का आंकड़ा पार हुआ**
19th मई 2020	**कोरोनावायरस केस ने 1 लाख का आंकड़ा पार किया**
01st जून 2020	**अनलॉक चरण 1.0**
03rd जून 2020	**कोरोनावायरस केस ने 2 लाख का आंकड़ा पार किया**
13th जून 2020	**कोरोनावायरस केस ने 3 लाख का आंकड़ा पार किया**
21st जून 2020	**कोरोनावायरस केस ने 4 लाख का आंकड़ा पार किया**

कोरोनावायरस के खतरे के बारे में जनता की राय कैसे बदल रही है?

भारत में उन लोगों के **प्रतिशत में लगातार वृद्धि हुई है जो सोचते हैं** कि वे या उनके **परिवार में कोई और कोरोनेवायरस से ग्रसित हो सकता है** क्योंकि भारत में मामलों की **संख्या तेजी से बढ़ती हुई दर से बढ़ रही है।** पिछले सप्ताह में, **मामलों में एक लाख की वृद्धि हुई।**

अप्रैल और मई के महीनों के दौरान जब **भारत सख्त लॉकडाउन की श्रृंखला के तहत था, लगभग 41-45% प्रतिशत लोग कोरोनोवायरस के स्थिर होने से डरते थे।**

हालाँकि, पहली **जून को अर्थव्यवस्था के खुलने के बाद**, 8 जून को **अनलॉक चरण 1 के शुरू होने के बाद,** यह आंकड़ा **20 जून को तेजी से बढ़कर 57% हो गया है।**

क्या भारतीयों को लगता है कि कोरोनावायरस से खतरा बढ़ा-चढ़ा कर पेश किया गया है?

22 मार्च को जनता कर्फ्यू तक पहुंचने वाले दिनों में, **आधे से अधिक उत्तरदाताओं** का मानना था कि **कोरोनावायरस से खतरा बढ़ा-चढ़ा कर पेश किया जा रहा था।**

हालांकि, यह **दृष्टिकोण देश में राष्ट्रव्यापी बंद** की घोषणा के बाद काफी **हद तक बदल गया, शायद इसने लोगों के मन में स्थिति की गंभीरता को दोहराया।**

अप्रैल और मई के दौरान, चूंकि भारत में एक सख्त लॉकडाउन जारी था, लगभग **58-60% उत्तरदाताओं ने नहीं सोचा था कि वायरस से खतरा बढ़ा चढ़ा कर पेश किया जा रहा है।**

हालांकि, **1 जून को अर्थव्यवस्था के खुलने के बाद से,** फिर भी, उत्तरदाताओं का **प्रतिशत जो सोचते हैं कि कोरोनवायरस का खतरा बढ़ा-चढ़ा कर पेश किया जा रहा है, बढ़ रहा है।**

वर्तमान सर्वेक्षण के निष्कर्ष और अनुमान प्रत्येक प्रमुख जनसांख्यिकीय सहित राज्यव्यापी 18+ वयस्कों के बीच 22 मार्च 2020 से 20 जून 2020 तक आयोजित किए गए **टीम C-voter** के दैनिक ट्रैकिंग पोल पर आधारित हैं।

डेटा को हर राज्य के ज्ञात जनसांख्यिकीय प्रोफ़ाइल में शामिल किया जाता है, जिसमें आयु वर्ग, सामाजिक समूह, आय, क्षेत्र, लिंग और शिक्षा स्तर शामिल हैं।

| सोशल मीडिया पार्टनर

अधिक जानकारी के लिए:
polstrat.com | teamcvoter.com